

अपराधी को क्षमा

2 कुरिन्थियों 2:5-11

5 यदि किसी ने उदास किया है, तो मुझे ही नहीं वरन् (कि उसके साथ बहुत कड़ाई न करूँ) कुछ कुछ तुम सब को भी उदास किया है। 6 ऐसे जन के लिये यह दण्ड जो भाइयों में से बहुतों ने दिया, बहुत है। 7 इसलिये इससे भला यह है कि उसका अपराध क्षमा करो और शान्ति दो, न हो कि ऐसा मनुष्य बहुत उदासी में डूब जाए। 8 इस कारण मैं तुम से विनती करता हूँ कि उसको अपने प्रेम का प्रमाण दो। 9 क्योंकि मैं ने इसलिये भी लिखा था कि तुम्हें परख लूँ कि तुम मेरी सब बातों के मानने के लिये तैयार हो कि नहीं। 10 जिसका तुम कुछ क्षमा करते हो उसे मैं भी क्षमा करता हूँ, क्योंकि मैं ने भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया हो, तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह में होकर क्षमा किया है। 11 कि शैतान का हम पर दौंव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं।

इन वचनों से हमें चार मुख्य शिक्षाएँ मिलती हैं:

1. अपराध क्षमा करो और अपराध करने वाले को शांति दो।
2. अपराध करने वाले को अपने प्रेम का प्रमाण दो।
3. मसीह की मौजूदगी में क्षमा किया जाए।
4. शैतान इंतजार में रहता है कि हम एक-दूसरे के अपराधों को क्षमा न करें।

क्षमा और अपराध को समझने की सही दृष्टि

यीशु मसीह ने हमें सिखाया कि हमें अपराधियों को क्षमा करना चाहिए, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हमारी क्षमा से अपराध को बढ़ावा मिले। क्षमा का उद्देश्य अपराधी को शांति देना होना चाहिए, न कि उसे और अधिक अपराध करने के लिए प्रेरित करना।

मुख्य बिंदु:

1. **क्षमा अपराधी को शांति दे, न कि उसे और अपराध करने का साहस।**
 - यदि हमारी क्षमा से अपराधी को अपने कार्यों पर पछतावा हो और वह सुधार की ओर बढ़े, तो यह सच्ची क्षमा होगी।
 - लेकिन यदि हमारी क्षमा उसे और अधिक अपराध करने के लिए प्रेरित करे, तो हमें समझदारी से कदम उठाना चाहिए।
2. **छोटे अपराधों और बड़े अपराधों में अंतर समझना आवश्यक है।**
 - पॉलुस ने "उदास करने" की बात की, जो अपेक्षाकृत हल्का अपराध है। ऐसे मामलों में क्षमा करना आसान होता है।
 - लेकिन जब अपराध बहुत गंभीर होता है (जैसे हत्या, बलात्कार, विश्वासघात आदि), तो केवल क्षमा ही पर्याप्त नहीं होती।
 - अपराधी के मन परिवर्तन के लिए प्रार्थना करना और उसे आवश्यक शिक्षा देना भी ज़रूरी है।
3. **यीशु मसीह ने क्रूस पर क्षमा दी, लेकिन उनके शिष्य ने सिखाया कि अपराधियों को सही राह पर लाना भी ज़रूरी है।**
 - हमें अपने जीवन में क्षमा का पालन करना चाहिए, लेकिन साथ ही यह भी देखना चाहिए कि अपराधी सुधार की ओर अग्रसर हो।
 - अगर हमारी क्षमा से अपराध बढ़ता है, तो हमें प्रेम और न्याय के संतुलन को बनाए रखना चाहिए।

निष्कर्ष:

क्षमा करना हमारा ईश्वरीय कर्तव्य है, लेकिन इसके प्रभावों पर भी ध्यान देना आवश्यक है। यदि क्षमा अपराधी को सुधारने के बजाय और अधिक अपराधी बना रही है, तो हमें उचित कदम उठाने चाहिए ताकि वह सही राह पर आ सके।

"अपने प्रेम का प्रमाण दो" का सही अर्थ

"प्रेम का प्रमाण दो" का अर्थ यह है कि हम अपने कार्यों से यह दिखाएं कि हम वास्तव में प्रेम करते हैं। सिर्फ शब्दों में प्रेम व्यक्त करना पर्याप्त नहीं है; इसे अपने व्यवहार और निर्णयों में भी दर्शाना आवश्यक है।

क्या केवल क्षमा करना ही प्रेम का प्रमाण है?

हाँ, क्षमा प्रेम का एक बहुत बड़ा प्रमाण है, और इसका सर्वोत्तम उदाहरण स्वयं यीशु मसीह हैं। उन्होंने अपने प्रेम को सिद्ध करने के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया।

प्रेम का प्रमाण देने के तरीके:

1. क्षमा करना:

- जब हम किसी को क्षमा करते हैं, तो हम दर्शाते हैं कि हमारे अंदर ईश्वरीय प्रेम है।
- यह दिखाता है कि हम अपने पिता (ईश्वर) की आज्ञा का पालन करते हैं, न कि केवल सुनते हैं।

2. अपराधी को शांति देना:

- क्षमा करने का उद्देश्य यह होना चाहिए कि अपराधी को हमारे प्रेम का अनुभव हो।
- अगर हमारी क्षमा से अपराधी में सुधार आता है, तो यही सच्चा प्रेम है।

3. यीशु मसीह का उदाहरण:

- उन्होंने हमें प्रेम का सबसे बड़ा प्रमाण दिया—अपना जीवन बलिदान करके।
- उन्होंने क्षमा के द्वारा अपने प्रेम को सिद्ध किया और हमें भी यही करने को कहा।

निष्कर्ष:

हमारी क्षमा ही हमारे प्रेम का सबसे बड़ा प्रमाण है। अगर हम अपने पिता (ईश्वर) की आज्ञा को मानते हैं, तो हमें केवल सुनने वाले नहीं, बल्कि उसे अपने जीवन में जीने वाले बनना चाहिए।

"मसीह की मौजूदगी में क्षमा किया जाए"

क्योंकि क्षमा का स्रोत केवल यीशु मसीह से ही बहता है। यदि क्षमा मसीह की गैरमौजूदगी में दी जाती है, तो वह अपराध को बढ़ावा दे सकती है, न कि अपराधी को शांति।

इसका सही अर्थ क्या है?

1. यीशु मसीह ही क्षमा का सच्चा स्रोत हैं:

- मानव अपनी शक्ति से पूरी तरह क्षमा नहीं कर सकता।
- केवल मसीह की आत्मा के द्वारा सच्ची क्षमा संभव है, जो अपराधी के हृदय को परिवर्तित कर सकती है।

2. गलत तरीके से क्षमा देने का परिणाम:

- अगर बिना मसीह की मौजूदगी (अर्थात उनके सिद्धांतों और आत्मा की अगुवाई के बिना) क्षमा दी जाए, तो यह अपराधी को और अधिक अपराध करने का साहस दे सकती है।
- क्षमा का उद्देश्य अपराध को प्रोत्साहित करना नहीं, बल्कि अपराधी को पश्चाताप और परिवर्तन की ओर ले जाना है।

3. मसीह की मौजूदगी में क्षमा कैसे दें?

- प्रार्थना और आत्मिक मार्गदर्शन से क्षमा करें।
- यह देखें कि अपराधी को हमारी क्षमा से सच्ची शांति और सुधार मिले।
- क्षमा देने से पहले यह समझें कि क्या वह व्यक्ति अपने अपराध को स्वीकार कर पश्चाताप कर रहा है या नहीं।

निष्कर्ष:

सच्ची क्षमा तभी प्रभावी होगी जब यह मसीह की मौजूदगी में दी जाए, क्योंकि वही इसके वास्तविक स्रोत हैं। यदि हम मसीह के बिना क्षमा देते हैं, तो वह अपराध को रोकने के बजाय उसे बढ़ावा दे सकती है।

शैतान इंतजार में रहता है कि हम एक-दूसरे के अपराधों को क्षमा न करें

शैतान की सबसे बड़ी चाल यही है कि वह साबित करे कि **इंसान स्वर्ग के योग्य नहीं है।**

शैतान की युक्ति:

1. **शैतान का मानना है कि इंसान इतना पापी है कि वह स्वर्ग नहीं जा सकता।**
2. **यह सच भी है कि कोई भी इंसान अपने कर्मों के आधार पर स्वर्ग का अधिकारी नहीं हो सकता।**
3. **लेकिन यीशु मसीह ने अपनी जान देकर हमें क्षमा दी ताकि हम स्वर्ग जा सकें।**
4. **अगर हम दूसरों को क्षमा नहीं करेंगे, तो हम खुद को भी संकट में डाल देंगे।**

अगर हम क्षमा न करें तो क्या होगा?

- **शैतान को यह कहने का मौका मिलेगा कि जिसे क्षमा नहीं मिली, वह पापी है और स्वर्ग के योग्य नहीं।**
- **साथ ही, जिसने क्षमा नहीं की, वह भी परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर रहा है।**
- **यह अपने आप में एक अपराध है, जिसका परिणाम यही होगा कि वह व्यक्ति स्वर्ग का अधिकारी नहीं होगा।**

निष्कर्ष:

हमें क्षमा करना चाहिए ताकि

1. **खुद का भी भला हो (स्वर्ग का अधिकारी बन सकें)।**
2. **अपराधी का भी भला हो (उसे पश्चाताप और परमेश्वर की दया का अवसर मिले)।**
3. **शैतान को हमें परमेश्वर से दूर करने का कोई मौका न मिले।**

धन्य हैं हमारे खुदा और धन्य है उनका न्याय

Led by the Holy Spirit, Guided by Faith and Scripture

Biblical Commentary by Sonu Kumar Saha

Date: 14th February 2025

Contact: sks.officeuse@gmail.com

I sincerely thank my respected Pastor, Rev. Sahadev Nanda, for teaching this topic so profoundly and clearly. His guidance has been a great blessing, enriching both my knowledge and faith. May God continue to bless him abundantly.

With gratitude,

Sonu Kumar Saha